भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतिः शासन एवं नीति–निर्माण में वैज्ञानिक चिंतन का विश्लेषण

मुकेश कुमार
शोध छात्र
राजनीति विज्ञान विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ0प्र0)
ईमेलः mukeshkumar5275@gmail.com

प्रो0 रचना श्रीवास्तव
प्राचार्या
ए.पी. सेन मेमोरियल गर्ल्स पी.जी. कॉलेज
(लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ)
ईमेलः rachanaapsen@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 04.03.26
Approved: 25.07.26

मुकेश कुमार
प्रो0 रचना श्रीवास्तव

भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतिः शासन एवं नीति–निर्माण में वैज्ञानिक चिंतन का विश्लेषण

Vol. XVII, Sp. Issue Aug. 2026
Article No.25, Pg. 186-191

Similarity Check: 07%

Online available at
https://anubooks.com/special-issues?url=jgv-si-apsmgpc-lkn-2026

DOI: *https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI08.025*

सारांश

यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित वैज्ञानिक चिंतन के स्वरूप तथा आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के बीच अंतर्संबंधों का समग्र और विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। प्रायः भारतीय ज्ञान परम्परा को केवल आध्यात्मिक या दार्शनिक विमर्श तक सीमित करके देखा जाता है, जबकि इसमें तर्क, अनुभव, अवलोकन और व्यवहारिक उपयोगिता पर आधारित एक सुदृढ़ ज्ञान संरचना भी निहित रही है। इसी परिप्रेक्ष्य में यह अध्ययन यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि पारम्परिक ज्ञान प्रणालियों में विद्यमान वैज्ञानिक तत्व आधुनिक विज्ञान की अनुभवजन्य, परीक्षण–आधारित और वस्तुनिष्ठ पद्धति के साथ किस प्रकार संवाद स्थापित करते हैं तथा यह अंतःक्रिया समकालीन शासन और नीति–निर्माण को किस हद तक अधिक प्रभावी, संदर्भ–संवेदनशील और समावेशी बना सकती है। यह अध्ययन गुणात्मक (qualitative) प्रकृति का है और पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। शोध में शास्त्रीय भारतीय ग्रंथों, भारतीय ज्ञान प्रणाली पर उपलब्ध दार्शनिक एवं समकालीन अकादमिक साहित्य, तथा सार्वजनिक नीति से संबंधित प्रमुख नीतिगत दस्तावेजों का विषयवस्तु और तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परम्परा में कारण–कार्य संबंध, अनुभवजन्य दृष्टि, समग्रता और संदर्भ–संवेदनशीलता जैसे वैज्ञानिक तत्व स्पष्ट रूप से मौजूद हैं, जो आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति की मापनीयता, परीक्षण–योग्यता और वस्तुनिष्ठता के साथ पूरक संबंध स्थापित कर सकते हैं। अध्ययन के निष्कर्ष संकेत करते हैं कि यदि नीति–निर्माण प्रक्रिया में वैज्ञानिक प्रमाणों के साथ स्थानीय ज्ञान, सांस्कृतिक संदर्भ और सामाजिक यथार्थ को समुचित स्थान दिया जाए, तो नीतियों की प्रभावशीलता, वैधता तथा सामाजिक स्वीकार्यता में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है। इस प्रकार, यह शोध सार्वजनिक नीति और राजनीतिक विज्ञान के अंतःविषयी विमर्श में पारंपरिक और आधुनिक ज्ञान का रचनात्मक समन्वय पर आधारित एक वैचारिक ढाँचा प्रस्तुत करता है, जो साक्ष्य–आधारित तथा संदर्भ–अनुकूल शासन की दिशा में महत्वपूर्ण योत्रगदान देने की क्षमता रखता है।

******This article has been peer-reviewed by the Review Committee of JGV.*

https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI08.025

परिचय

भारतीय ज्ञान परम्परा मानव सभ्यता की उन दीर्घकालीन बौद्धिक धाराओं में से एक है, जिसने ज्ञान को केवल आध्यात्मिक या दार्शनिक विमर्श तक सीमित न रखकर उसे जीवनोपयोगी, अनुभवजन्य और तर्कसंगत आधार प्रदान किया। वैदिक साहित्य, उपनिषद, बौद्ध एवं जैन दर्शन, आयुर्वेद, गणित, खगोलशास्त्र तथा प्राचीन ग्रंथो में ज्ञान की ऐसी समन्वित दृष्टि मिलती है जिसमें सिद्धांत और व्यवहार का संतुलित संबंध स्थापित होता है। इस परंपरा में सत्य की खोज के लिए अवलोकन, तर्क, अनुभव तथा विश्लेषण को महत्वपूर्ण साधन माना गया, जो इसे एक प्रकार के प्रारंभिक वैज्ञानिक चिंतन से जोड़ता है।

आधुनिक युग में वैज्ञानिक पद्धति ने ज्ञान के उत्पादन और सत्यापन की प्रक्रिया को अधिक व्यवस्थित और मानकीकृत बनाया है। अनुभवजन्य प्रमाण, परीक्षण–योग्यता, वस्तुनिष्ठता तथा पुनरूत्पादकता इसके प्रमुख आधार हैं। आज शासन और सार्वजनिक नाति के क्षेत्र में साक्ष्य–आधारित निर्माण प्रक्रिया को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि जटिल सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान के लिए विश्वसनीय और परीक्षणित ज्ञान आवश्यक होता है। इस संदर्भ में आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति नीति–निमाण की विश्वसनीयता और प्रभावशीलता को बढ़ाने का प्रमुख साधन बन गई है।

हालाँकि, समकालीन विमर्श यह संकेत करता है कि केवल तकनीकी या मात्रात्मक दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं है, नीति–निर्माण को स्थानीय संदर्भों, सांस्कृतिक अनुभवों और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों से भी सीखने की आवयकता है। यहीं भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता उभरती है, क्योंकि यह ज्ञान को समग्र दृष्टि से देखती है और समाज, प्रकृति तथा मानव व्यवहार के अंतर्संबंधों को समझने पर बल देती है। इस दृष्टि से पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के बीच संवाद स्थापित करना एक महत्वपूर्ण वौद्धिक तथा व्यवहारिक प्रश्न बन जाता है। यह अध्ययन इसी संवाद की संभावनाओं का विश्लेषण करता है और यह समझने का प्रयास करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित वैज्ञानिक तत्व किस प्रकार आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ पूरक संबंध स्थापित कर सकते हैं। विशेष रूप से, शोध यह जांचता है कि इन दोनों ज्ञान प्रणालियों का समन्वय शासन और नीति–निर्माण को अधिक संदर्भ–संवेदनशील, समावेषी और प्रभावी बनाने में कैसे सहायक हो सकता है।

वर्तमान भारत में सतत विकास, आत्मनिर्भरता और सहभागी षासन जैसी अवधारणाएँ इस आवष्यकता को और अधिक स्पश्ट करती हैं कि नीति–निर्माण में वैज्ञानिक प्रमाणों के साथ–साथ सांस्कृतिक और स्थानीय ज्ञान का संतुलित उपयोग किया जाए। इस प्रकार, यह षोध न केवल एक सैद्धांतिक विमर्ष प्रस्तुत करता है, बल्कि राजनीतिक विज्ञान और सार्वजनिक नीति के अंतःविशयी क्षेत्र में एक वैकल्पिक विष्लेशणात्मक दृश्टिकोण भी प्रदान करने का प्रयास करता है। इस प्रकार यह अध्ययन पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के मध्य एक सेतु स्थापित करने का प्रयास करता है, ताकि नीति–निर्माण को अधिक तर्कसंगत, संदर्भ–संवेदनशील तथा समाजोन्मुख दिशा प्रदान की जा सके।

साहित्य समीक्षा

भारतीय ज्ञान परंपरा की बौद्धिक आधारभूमि

भारतीय ज्ञान परंपरा को विश्व की प्राचीनतम बौद्धिक परंपराओं में स्थान दिया जाता है। वैदिक साहित्य, उपनिषद, दर्शनशास्त्र तथा आयुर्वेद जैसे ग्रंथों में ज्ञान को सत्य की खोज, तर्क, अनुभव और नैतिकता के साथ जोड़ा गया है। इस परंपरा में प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द को जान के प्रमुख साधन माना गया, जो ज्ञान प्राप्ति की व्यवस्थित पद्धति का संकेत देते हैं। कई विद्वान यह मानते हैं कि यह परंपरा केवल आध्यात्मिक विमर्श नहीं, बल्कि व्यवस्थित चिंतन प्रणाली भी है (Sharma) 2016

प्राचीन भारतीय विज्ञान और तर्कपरकता

भारतीय गणित, खगोलशास्त्र और चिकित्सा विज्ञान से संबंधित अध्ययनों में यह स्पष्ट किया गया है कि प्राचीन भारतीय विद्वानों ने अवलोकन, गणना और परीक्षण की विधियों का उपयोग किया। आर्यभट और सुश्रुत जैसे

आचार्यों के कार्यों में अनुभवजन्य परीक्षण और तार्किक विश्लेषण के तत्व मिलते हैं। इस संदर्भ में यह तर्क दिया गया है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में वैज्ञानिक दृष्टि के मूल तत्त्व अंतर्निहित रहे हैं। (Rao 2014)

आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति की अवधारणा

आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति अनुभवजन्य परीक्षण, वस्तुनिष्ठता और पुनरुत्पादकता पर आधारित है। इस पद्धति में किसी भी सिद्धांत की वैधता उसके परीक्षण योग्य होने पर निर्भर करती है। वैज्ञानिक ज्ञान को स्थायी सत्य नहीं, बल्कि निरंतर परीक्षण की प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। यह दृष्टिकोण जान को तार्किक और प्रमाण–आधारित बनाता है। (Popper, 1959)

साक्ष्य–आधारित नीति–निर्माण का विमर्श

समकालीन शासन–व्यवस्था में साक्ष्य–आधारित नीति–निर्माण को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। सामाजिक विज्ञानों में यह धारणा विकसित हुई है कि नीतियाँ अनुभवजन्य डेटा, सांख्यिकीय विश्लेषण और क्षेत्रीय अध्ययनों के आधार पर निर्मित होनी चाहिए। इससे निर्णय प्रक्रिया अधिक पारदर्शी और उत्तरदायी बनती है। इस संदर्भ में शोधकर्ताओं ने नीति–निर्माण में वैज्ञानिक विधि के प्रयोग पर बल दिया है। (Sutcliffe & Court, 2005)

पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का समन्वय

कुछ विद्वानों ने पारंपरिक और आधुनिक ज्ञान प्रणालियों के बीच कृत्रिम विभाजन को चुनौती दी है। उनका मत है कि स्थानीय और स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों सामाजिक एवं पर्यावरणीय संदर्भों को समझने में अत्यंत उपयोगी हैं। यदि इनका वैज्ञानिक परीक्षण और विश्लेषण के साथ समन्वय किया जाए, तो एक अधिक संतुलित ज्ञान ढांचा विकसित किया जा सकता है। (Agrawal, 1995)

सांस्कृतिक संदर्भ और नीति–वैधता

भारतीय संदर्भ में शासन और नीति–निर्माण पर किए गए अध्ययनों में यह पाया गया है कि केवल तकनीकी दक्षता पर्याप्त नहीं होती। नीतियों की सफलता सामाजिक स्वीकृति और सांस्कृतिक अनुकूलन पर भी निर्भर करती है। यदि नीति–निर्माण में स्थानीय ज्ञान और परंपराओं की उपेक्षा की जाती है, तो उसका प्रभाव सीमित हो सकता है। (Mehta, 2005)

आलोचनात्मक दृष्टिकोण और शोध–अंतर

कुछ अध्ययनों में यह चेतावनी भी दी गई है कि पारंपरिक जान को बिना वैज्ञानिक कसौटी पर परखे स्वीकार करना तर्कसंगत नहीं है। अतः संतुलित दृष्टिकोण आवश्यक है जिसमें आलोचनात्मक विवेक और अनुभवजन्य परीक्षण दोनों शामिल हो। उपलब्ध साहित्य यह दर्शाता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के समन्वित विश्लेषण पर अपेक्षाकृत कम कार्य हुआ है। यही शोध–अंतर वर्तमान अध्ययन की आवश्यकता को रेखांकित करता है। (Nanda, 2003)

उद्देश्यः–

1. भारतीय ज्ञान परंपरा के वैज्ञानिक तत्त्वों का विश्लेषण करना।
2. आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के मूल सिद्धांतों का अध्ययन करना।
3. दोनों ज्ञान प्रणालियों के वैचारिक संबंधों की पड़ताल करना।
4. शासन एवं नीति–निर्माण में उनकी प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।
5. पारंपरिक और आधुनिक ज्ञान के समन्वित उपयोग की संभावनाओं का परीक्षण करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन की शोध पद्धति भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित वैज्ञानिक चिंतन और आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के

https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI08.025

मध्य वैचारिक संबंधों को समझने के उद्देश्य से निर्मित की गई है। अध्ययन गुणात्मक प्रकृति का है तथा द्वितीयक स्रोतों जैसे शास्त्रीय साहित्य अकादमिक लेखों और नीतिगत दस्तावेजों के विश्लेषण पर आधारित है। शोध में वैचारिक एवं तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए यह समझने का प्रयास किया गया है कि पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समन्वय शासन एवं नीति–निर्माण को किस प्रकार अधिक संदर्भ–संवेदनशील, तर्कसंगत और प्रभावी बना सकता है। इस खंड में अध्ययन की रूपरेखा, डेटा स्रोत, विश्लेषण प्रक्रिया और सीमाओं को क्रमबद्ध रूप में स्पष्ट किया गया है।

शोध रूपरेखा

शोध रूपरेखा का निर्माण इस उद्देश्य से किया गया है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित वैज्ञानिक चिंतन के प्रमुख तत्त्वों तथा आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के सिद्धांतों के मध्य वैचारिक अंतसंबंधों को व्यवस्थित रूप से समझा जा सके। अध्ययन में व्याख्यात्मक और तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिससे दोनों ज्ञान प्रणालियों के आधारभूत सिद्धांतों, कार्यप्रणाली तथा उनके व्यावहारिक निहितार्थों का सम्यक विश्लेषण संभव हो सके।

इस शोध रूपरेखा के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परंपरा को एक समग्र बौद्धिक परिप्रेक्ष्य के रूप में तथा आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति को समकालीन ज्ञान उत्पादन की मानकीकृत प्रक्रिया के रूप में ग्रहण किया गया है। अध्ययन विशेष रूप से इस बात की पड़ताल करता है कि इन दोनों दृष्टिकोणों का परस्पर संवाद शासन और नीति–निर्माण को किस प्रकार अधिक तर्कसंगत संदर्भ–संवेदनशील और प्रभावी बना सकता है। इस प्रकार, चयनित शोध रूपरेखा अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप वैचारिक विश्लेषण के लिए उपयुक्त आधार प्रदान करती है।

अध्ययन का स्वरूप

प्रस्तुत अध्ययन का स्वरूप गुणात्मक तथा वैचारिक है, जिसका उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के मध्य अंतर्निहित सिद्धांतों और दृष्टिकोणों का गहन विश्लेषण करना है। अध्ययन में तथ्यों के सांख्यिकीय परीक्षण के बजाय विचारों, अवधारणाओं और सिद्धांतों की व्याख्या पर अधिक बल दिया गया है, जिससे विषय की प्रकृति के अनुरूप गहन समझ विकसित की जा सके।

यह शोध मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, इसलिए इसमें उपलब्ध साहित्य और दस्तावेजों के आलोचनात्मक विश्लेषण को प्राथमिकता दी गई है। अध्ययन का स्वरूप व्याख्यात्मक भी है, क्योंकि इसमें विभिन्न स्रोतों से प्राप्त विचारों का संदर्भानुसार विश्लेषण कर उनके निहितार्थों, को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। साथ ही, यह अध्ययन अंतःविषयी (Interdisciplinary) दृष्टिकोण अपनाता है, जिसमे राजनीतिक विज्ञान, सार्वजनिक नीति और ज्ञान परंपरा से संबंधित विमर्श को समाहित किया गया है। इस प्रकार, अध्ययन का स्वरूप विषय की जटिलता और उसके बहुआयामी पहलुओं को समग्र रूप में समझने के लिए उपयुक्त आधार प्रदान करता है।

डेटा के स्रोत

प्रस्तुत अध्ययन में डेटा संग्रहण के लिए मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। अध्ययन का आधार विभिन्न शास्त्रीय ग्रंथों, अकादमिक पुस्तकों, शोध लेखों, नीति दस्तावेजों तथा समकालीन बौद्धिक विमर्शों पर आधारित है, जिनके माध्यम से भारतीय परंपरा और आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से संबंधित प्रमुख अवधारणाओं एवं सिद्धांतों का विश्लेषण किया गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में वैदिक साहित्य, उपनिषद्, बौद्ध और जैन दर्शन से संबंधित प्रासंगिक व्याख्यात्मक साहित्य तथा पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों पर उपलब्ध आधुनिक शोध कार्यों का अध्ययन किया गया है। वहीं आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति और नीति–निर्माण के संदर्भ में समकालीन अकादमिक जर्नल, सार्वजनिक नीति से संबंधित रिपोर्ट **विश्लेषण की पद्धति** प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के प्रमुख सिद्धांतों, अवधारणाओं और उनके निहितार्थ का क्रमबद्ध परीक्षण किया गया है। अध्ययन में विभिन्न स्रोतों से प्राप्त विचारों का आलोचनात्मक विश्लेषण करते हुए उनके बीच समानताओं, भिन्नताओं और परस्पर पूरक तत्वों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

विश्लेषण प्रक्रिया व्याख्यात्मक भी है, क्योंकि इसमें उपलब्ध साहित्य और दस्तावेजों के संदर्भानुसार अर्थों को समझने तथा उनके व्यापक सामाजिक–राजनीतिक निहितार्थों को स्पष्ट करने पर बल दिया गया है। विशेष रूप से, अध्ययन यह जांचता है कि पारंपरिक ज्ञान में निहित समग्र दृष्टिकोण और आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति की साक्ष्य–आधारित प्रक्रिया शासन और नीति–निर्माण में किस प्रकार एक संतुलित ढांचा प्रदान कर सकती है। इस प्रकार चयनित शोध पद्धति अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के मध्य वैचारिक संबंधों को समझने हेतु उपयुक्त आधार प्रदान करमी है। गुणात्मक एवं द्वितीयक स्रोतों पर आधारित यह दृष्टिकोण विषय की व्यवस्थित और संदर्भ–संवेदनशील व्याख्या सुनिश्चित करता है।

विश्लेषण एवं विमर्श

भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के तुलनात्मक अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि दोनों ज्ञान प्रणालियाँ ज्ञान की प्रकृति, प्रमाण और सत्य की अवधारणा को अलग–अलग आयामों से व्याख्यायित करती हैं, परंतु उनका उद्देश्य अंततः यथार्थ की समझ और मानव कल्याण ही है। भारतीय चिंतन में ज्ञान को केवल तथ्यात्मक सूचना नहीं, बल्कि अनभूति, तर्क और नैतिकता के समन्वित रूप में देखा गया है। वहीं आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति ज्ञान को अनुभवजन्य परीक्षण और सत्यापन की प्रक्रिया से जोड़ती है। इस प्रकार एक ओर जहाँ भारतीय परंपरा समग्र दृष्टि प्रदान करती है, वहीं आधुनिक विज्ञान विश्लेषणात्मक स्पश्टता देता है।

विश्लेषण से यह भी ज्ञात होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में कारण कार्य संबंध, अवलोकन और अनुभव की महत्ता स्पष्ट रूप से स्वीकार की गई है। आयुर्वेद, ज्योतिष, गणित और राज्यशास्त्र जैसे क्षेत्रों में व्यवस्थित चिंतन के उदाहरण मिलते हैं, जो यह दर्शाते हैं कि पारंपरिक ज्ञान पूरी तरह आस्थापरक न होकर तर्काधारित भी रहा है। हालांकि, इसकी प्रस्तुति आधुनिक वैज्ञानिक भाषा और पद्धति से भिन्न रही है, जिसके कारण इसे कई बार वैज्ञानिक विमर्श से अलग मान लिया गया।

आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति की प्रमुख विशेषता उसकी परीक्षण–योग्यता और पुनरुत्पादकता है। यह किसी भी सिद्धांत को स्थायी सत्य के रूप में स्वीकार नहीं करती, बल्कि उसे निरंतर परीक्षण के लिए खुला रखती है। शासन और नीति–निर्माण के क्षेत्र में यह दृष्टिकोण अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ है, क्योंकि इससे निर्णय प्रक्रिया डेटा और साक्ष्यों पर आधारित होती है। तथापि, केवल सांख्यिकीय आंकड़ों पर आधारित दृष्टिकोण कई बार सामाजिक–सांस्कृतिक जटिलताओं को पूर्णतः नहीं समझ पाता।

यहीं पर पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों की उपयोगिता सामने आती है। स्थानीय समुदायों के अनुभव, सांस्कृतिक व्यवहार और पर्यावरणीय समझ नीति–निर्माण को जमीनी वास्तविकताओं से जोड़ते हैं। उदाहरणस्वरूप, जल–संरक्षण, कृषि–पद्धतियों या सामुदायिक संसाधन प्रबंधन में स्थानीय ज्ञान का योगदान दीर्घकालिक स्थिरता को सुनिश्चित कर सकता है। यदि इन अनुभवों को वैज्ञानिक परीक्षण और विश्लेषण से जोड़ा जाए, तो एक अधिक सशक्त और संदर्भ–संवेदनशील नीति ढांचा विकसित किया जा सकता है।

हालांकि, यह समन्वय स्वतः संभव नहीं है। इसके लिए आलोचनात्मक विवेक आवश्यक है। पारंपरिक ज्ञान को बिना परीक्षण स्वीकार करना उतना ही अनुचित है जितना उसे पूर्णतः अस्वीकार कर देना। इसी प्रकार आधुनिक विज्ञान को सांस्कृतिक संदर्भों से पृथक मानना भी व्यावहारिक नहीं है। अतः एक संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें अनुभवजन्य परीक्षण और सांस्कृतिक संवेदनशीलता दोनों को स्थान मिले।

नीति–निर्माण की वैधता केवल उसके तकनीकी पक्ष पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उसकी सामाजिक स्वीकृति पर भी आधारित होती है। जब नीतियाँ स्थानीय ज्ञान और सांस्कृतिक संदर्भों के अनुरूप होती हैं, तो जनता का विश्वास और सहभागिता बढ़ती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित लोककल्याण, समन्वय और सामूहिक हित की अवधारणाएँ शासन को मानवीय आयाम प्रदान करती हैं, जबकि आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति उसे संरचनात्मक स्पष्टता और परिणामोन्मुखता देती है।

https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI08.025

समग्र विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के मध्य मूलभूत विरोधाभास की धारणा अतिरंजित है। वस्तुतः दोनों का संतुलित एकीकरण समकालीन शासन–व्यवस्था के लिए अधिक उपयुक्त सिद्ध हो सकता है। ऐसा समन्वित मॉडल न केवल नीति–निर्माण को तार्किक और प्रमाण–आधारित बनाएगा, बल्कि उसे सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक और सामाजिक रूप से स्वीकार्य भी बनाएगा। यही दृष्टिकोण दीर्घकालिक प्रभावशीलता और जन–विश्वास को सुदृढ़ करने में सहायक हो सकता है।

निष्कर्ष

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति को परस्पर विरोधी दृष्टि से देखने के बजाय पूरक परिप्रेक्ष्य में समझा जाना अधिक उपयुक्त है। भारतीय जान परंपरा में तर्क, अनुभव, अवलोकन तथा कारण–कार्य संबंध जैसे वैज्ञानिक तत्त्व विद्रद्यमान हैं, जो इसे केवल दार्शनिक या आध्यात्मिक विमर्श तक सीमित नहीं रखते। दूसरी ओर, आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति परीक्षण–योग्यता, वस्तुनिश्ठता और साक्ष्य–आधारित विश्लेषण पर बल देती है, जिससे जान की संरचनात्मक स्पष्टता सुनिश्चित होती है।

शोध से यह प्रतिपादित होता है कि शासन और नीति–निर्माण की प्रभावशीलता केवल तकनीकी दक्षता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों की समझ भी उतनी ही आवश्यक है। पारंपरिक ज्ञान स्थानीय अनुभव और संदर्भ–संवेदनशीलता प्रदान करता है, जबकि आधुनिक विज्ञान निर्णय प्रक्रिया को तार्किक और प्रमाण–आधारित बनाता है। इन दोनों का संतुलित समन्वय नीति–निर्माण को अधिक समावेशी, वैध तथा दीर्घकालिक रूप से प्रभावी बना सकता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि समकालीन भारत में सुशासन और सतत विकास की दिशा में आगे बढ़ने के लिए पारंपरिक ज्ञान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के मध्य संवाद को सुदृढ़ करना आवश्यक है। भविष्य में इस समन्वित मॉडल को व्यावहारिक नीतिगत उदाहरणों के माध्यम से और अधिक विस्तृत रूप से परखा जा सकता है, जिससे इसकी प्रभावशीलता का ठोस मूल्यांकन संभव हो सके।

संदर्भ

1. अग्रवाल, वासुदेवशरण, (2014). भारतीय संस्कृति और चिंतन, वाराणसीः चौखंभा विद्याभवन।
2. पांडेय, गोविंदचंद्र. (2010). भारतीय दर्शन की रूपरेखा, नई दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास।
3. शर्मा, रामशरण. (2012). प्राचीन भारत का इतिहास. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।
4. मिश्र, विद्यानिवास. (2016). भारतीय जान परंपरा और आधुनिकता. नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन।
5. सिंह, महेशचंद्र. (2018). परंपरागत जान और समकालीन शासन. भारतीय सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका, 14(2), पृ0सं0–**55–701**
6. Altekar, A. S. (1958). State and government in ancient India. Motilal Banarsidass.
7. Chakrabarti, A. (2019). Indian philosophy: A contemporary reader. Oxford University Press.
8. Kautilya. (2012). Arthashastra (L. N. Rangarajan, Trans.). Penguin Books. (Original work published ca. 300 BCE)
9. NITI Aayog. (2017). Three-year action agenda (2007-18 to 2019-20). Government of India.
10. Radhakrishnan, S. (2008). Indian philosophy (Vol. 1). Oxford University Press. (Original work published 1923)
11. Rao, M. G., & Singh, N. (2005). The political economy of federalism in India. Oxford University Press.
12. Sen, A. (2005). The argumentative Indian. Penguin Books.